

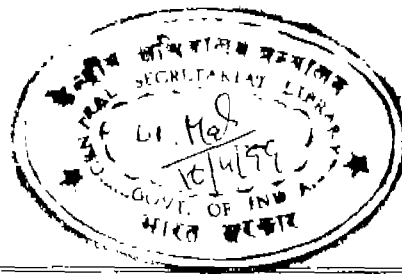


भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं० 283]
No. 283]

नई दिल्ली, बुधवार, दिसम्बर 24, 1998/पौष 3, 1920
NEW DELHI, THURSDAY, DECEMBER 24, 1998/PAUSA 3, 1920

वाणिज्य मंत्रालय

(क्षेपण-रोधी तथा संबंधित कार्य महाविभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 24 दिसम्बर, 1998

आरम्भिक जाँच निष्कर्ष

विषय : ई पी डी एम रबड़ के आयातों के संबंध में क्षेपण-रोधी-अन्वेषण - आरंभिक जाँच निष्कर्ष।

फा. सं. 16/1/98/डी जी ए डी.—1995 में यथा-संशोधित कस्टम टैरिफ एक्ट, 1875 तथा उसकी कस्टम टैरिफ (क्षेपित वस्तुओं पर क्षेपण रोधी सीमा शुल्क की पहचान, भूल्यांकन एवं समाहरण तथा हानि का निश्चयन) नियमावली, 1995 का पालन करते हुए—

अ पद्धति

जाँच के लिए नीचे दी गई पद्धति का पालन किया गया है :—

- (1) पदनामित अधिकारी (जिसे इसमें इसके बाद अधिकारी कहा गया है), ने नियमों के अधीन जापानी मूल के या जापान से निर्यातित ई पी डी एम रबड़ के आरोपित क्षेपण (डम्पिंग) के संबंध में स्वदेशी उद्योग की ओर से मैसर्स हरदिल्लिया यूनिवर्स लि. से लिखित आवेदन प्राप्त किया;
- (2) वादी द्वारा पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत कर देने के आधार पर अधिकारी ने जापान से ई पी डी एम रबड़ के आयातों पर क्षेपण जाँच आरंभ करने का निश्चय किया। जाँच आरंभ करने से पहले, नियमावली के नियम 5(5) के अनुसार अधिकारी ने जापान दूतावास को क्षेपण का आरोप प्राप्त होने की जानकारी दे दी;

- (3) अधिकारी ने कस्टम टैरिफ एक्ट, 1975 की अनुसूची 1 के उप-शीर्ष 4002.70 के अंतर्गत वर्गीकृत जापानी मूल के या जापान से निर्यातित ई पी डी एम रबड़ के आयातों के संबंध में प्रेक्षण-रोधी जाँच आरंभ करते हुए एक आम सूचना 20 मई, 1998 से भारत के सम्पूर्ण, असाधारण में जारी की ;
- (4) अधिकारी ने आम सूचना की प्रतियाँ जापान के ज्ञात निर्यातकों ॥ निम्नका विवरण वादी द्वारा दिया गया था ॥ तथा भारत में उद्योग एसोसिएशन्स को भेजी और नियम 6॥2॥ के अनुसार उन्हें अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया ;
- (5) अधिकारी ने आम सूचना की एक प्रति भारत में ई पी डी एम रबड़ के ज्ञात आयातकों को भेजी और उनसे पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपनी राय लिखित रूप में देने के लिए कहा ;
- (6) अधिकारी एवं सीमा शुल्क ॥ सी बी ई सी ॥ से, जाँच अवधि सहित पिछले तीन वर्षों के दौरान ई पी डी एम रबड़ के आयातों का विवरण देने का अनुरोध किया गया था । तथापि, सी बी ई सी से कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई ।
- (7) अधिकारी ने नियम उपरोक्त 6॥3॥ के अनुसार वाद याचिका की प्रति जापान के ज्ञात निर्यातकों तथा जापानी दूतावास को दी ;
- (8) अधिकारी ने संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए नियम 6॥4॥ के अनुसार विषयगत भास के निम्नलिखित निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी ;
- क॥ जापान सिन्थेटिक रबड़ कं०, जापान, जो अब जे एस आर कार्पोरेशन के नाम से जानी जाती है तथा जिसे इसमें इसके बाद जे एस आर भी कहा गया है ;
- ख॥ डी एस एम इडेमिट्सु कं. लि., जापान ॥ जिसे इसमें इसके बाद डी एस एम भी कहा गया है ॥
- (9) नई दिल्ली में विषयगत देश के दूतावास को भी नियम 6॥2॥ के अनुसार जाँच आरंभ होने की सूचना दे दी गई थी और उनसे अपने देश के निर्यातकों / उत्पादकों से निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली भर कर भेजने का आग्रह करने का अनुरोध किया गया । निर्यातक को भेजे गए पत्र, याचिका तथा प्रश्नावली की प्रतियाँ, ज्ञात निर्यातक ॥ निर्यातकों ॥ / उत्पादक ॥ उत्पादकों ॥ की सूची सहित दूतावास को भी भेजी गई

- (10) भारत में ई पी डी एम रबड़ के ज्ञात आयातकों से, नियम 6[4] के अनुसार आवश्यक सूचना प्राप्त करने के लिए, उन्हें एक प्रश्नावली भेजी गई ;
- (11) वादी से हानि संबंधी सूचना माँगी गई थी और जो प्राप्त भी हो गई ;
- (12) अधिकारी ने विभिन्न संबंध पार्टीयों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का गैर-बोपनीय रूप, पब्लिक फाइल के रूप में , इसमें रूखि रखने वाली पार्टीयों के निरीक्षण के लिए रखा :
- (13) ^{सर्वोत्तम} उत्पादन की लागत तथा भारत में विषयगत माल बनाने एवं बेचने की लागत का हिसाब लगाने के लिए, सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धान्तों [जी ए ए पी] के आधार तथा वादी द्वारा दी गई सूचना पर, लागत जाँच की गई। ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिए किया गया कि क्या क्षेपण मार्गिन से-निम्नतर क्षेपण-रोधी इयुटी, स्वदेशी उद्योग को हुई हानि को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होनी :
- (14) जाँच 1 अप्रैल, 1996 से 30 सितम्बर, 1997 की अवधि [18 महीने] के दौरान की गई थी :

ख वादी, निर्यातकों, आयातकों एवं रूखि रखने वाली अन्य पार्टीयों द्वारा प्रस्तुत किए गए विचार एवं अधिकारी द्वारा उनकी जाँच

- 2 वादी, निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य रूखि रखने वाली अन्य पार्टीयों द्वारा किए गए प्रतिवेदनों को प्रकाशित किया गया, जाँचा गया, उन पर विचार किया गया और इस अधिसूचना में उचित स्थानों पर निपटाया गया है ।

ई विचाराधीन उत्पाद

3. वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद सभी स्वरूपों/ग्रेडों/विशुद्धताओं का ई पी डी एम रबड़ है। ई पी डी एम रबड़ सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची-1 के सीमाशुल्क उप-शीर्ष 4002.70 के अंतर्गत वर्गीकृत है। ई पी डी एम सुमेलीकृत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार वर्गीकरण प्रणाली के उप शीर्ष सं. 4002.70.09 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है तथा यह आई टी सी उप शीर्ष सं 4002.70.01 के अंतर्गत वर्गीकृत पोलिबुटाडीन से भिन्न है।

- 4 वर्तमान जाँच में विचाराधीन सभी रूपों / वर्गों / शुद्धताओं का उत्पाद ई पी डी एम रबड़ है । ई पी डी एम रबड़, कस्टम टैरिफ एक्ट, 1975 की अनुसूची-1 में कस्टम उप-शीर्ष 4002.70 के अंतर्गत श्रेणीकृत है ।

- 5 तथापि, उपरोक्त बताए गए उत्पादन पद्धति, कार्य एवं उपयोग तथा कस्टम श्रेणीकरण केवल संकेतात्मक है और किसी भी तरह से वर्तमान जाँच के विस्तार पर बाध्यकर नहीं है ।

समान वस्तुएँ

- 6 यह जाँचने के लिए कि क्या स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित ई पी डी एम रबड़ वही चीज है जो जापान से निर्यातित ई पी डी एम रबड़ है, उसकी भौतिक विशेषताएँ (आकार, रासायनिक संगठन, कच्चा माल) उत्पादन प्रक्रिया तथा टेक्नोलॉजी, कार्य तथा उपयोग, उत्पाद विनिर्देश, मूल्य निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा माल के टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया गया है।
- 7 डी एस एम द्वारा यह तर्क दिया गया है कि ई पी डी एम का उत्पादन करने के लिए अनेक विभिन्न टेक्नोलॉजी हैं जिसके परिणामस्वरूप उत्पादित माल की क्वालिटी में अंतर आ जाता है। और भी, निर्यातक द्वारा यह तर्क दिया गया है कि ई पी डी एम की तुलना एन बी आर से नहीं की जा सकती क्योंकि एन बी आर की उत्पादन प्रक्रिया, ई पी डी एम की उत्पादन प्रक्रिया से कम संश्लिष्ट है। विभिन्न उत्पादकों के ई पी डी एम में परिवर्तन के लिए उसके नुस्खे में परिवर्तन जरूरी है जिसके बिना तैयार उत्पाद भिन्न भौतिक गुण प्रदर्शित करेगा।
- 8 अधिकारी ने नोट किया है कि निर्यातक ने केवल एक ही अंतर की ओर इशारा किया है जो विभिन्न उत्पादों द्वारा ई पी डी एम के उत्पादन की टेक्नोलॉजी का है। अधिकारी ने यह नोट किया है कि निर्यातक ने प्रच्छन्न रूप से यह स्वीकार किया है कि स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित माल, विषयगत देश से आयातित माल का स्थानापन्न हो सकता है। यदि निर्यातक का यह तर्क स्वीकार भी कर लिया जाता है कि क्वालिटी में कुछ अंतर हो सकता है, (यद्यपि यह तर्क टिकने वाला नहीं है और इसी आधार पर इसको अनदेखा किया जाना चाहिए) किन्तु क्वालिटी में अंतर का यह मतलब नहीं है कि दोनों माल एक दूसरे से बदले नहीं जा सकते। केवल क्वालिटी में अंतर के कारण तो उचित तुलना के लिए समायोजन किए जाने होते हैं। तथापि, बिना मात्रा वाले दावे को देखते हुए, वर्तमान परिस्थितियों में मूल्यों में कोई समायोजन संभव नहीं है। अतः अधिकारी की राय है कि जापान से निर्यातित माल एवं वादी द्वारा उत्पादित माल, एक दूसरे से बिल्कुल मिलते-जुलते हैं और तकनीकी एवं वाणिज्यिक दृष्टि से एक दूसरे के स्थानापन्न हैं। स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित माल, नियम 2(घ) के मायनों में, जापान से निर्यातित माल के समान ही वस्तु है।

उ स्वदेशी उद्योग

- 9 याचिका मै0 हरविस्लिया उनीवर्स लि0 द्वारा दायर की गई है। इस बात में कोई विवाद नहीं है कि भारत में ई पी डी एम रबड़ का और दूसरा कोई उत्पादक नहीं है। अतः वादी याचिका दायर करने के आधार का संतुष्ट करता है एवं पूर्ववर्ती नियम 2(ख) के अनुसार स्वदेशी उद्योग है।

ऊ क्षेपण

सामान्य मूल्य:

- 10 धारा 9 ए॥1॥सी॥ के अधीन किसी वस्तु से संबंधित सामान्य मूल्य का अर्थ निम्नलिखित होता है :

1॥ निर्यातक देश या सीमा में उपयोग के लिए आशयित समान वस्तु हेतु, व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में, तुलनात्मक मूल्य, जैसाकि उप धारा ॥6॥ के अधीन बनाए नियमों के अनुसार तय किया गया हो, या

11॥ जब निर्यातक देश या सीमा के स्वदेशी बाजार में, व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में, समान वस्तु की कोई बिक्रियाँ नहीं हों या बाजार की विशिष्ट दशा अथवा निर्यातक देश या सीमा के स्वदेशी बाजार में निम्न मात्रा में बिक्री हो, तो ऐसी बिक्रियों के कारण उचित तुलना नहीं हो सकती, ऐसी दशा में सामान्य मूल्य या तो -

क॥ निर्यातक देश या सीमा या उचित तीसरे देश से निर्यातित होने पर समान वस्तु का तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य जो उप-धारा ॥6॥ के अधीन बनाए गए नियमों के अनुसार यथा तय किया गया हो : या

ख॥ उत्पादन के देश में प्रशासनिक व्यय, बिक्री तथा सामान्य लागत एवं मुनाफे के साथ उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत, जैसाकि उपधारा ॥6॥ के अधीन बने नियमों के अनुसार तय किया गया हो :

बशर्ते कि उत्पादन के मूल देश के अलावा किसी अन्य देश से वस्तु का आयात करने के मामले में और जहाँ कि वस्तु, निर्यात करने वाले देश से केवल गुजरी ही है या ऐसी वस्तु निर्यातक देश में उत्पादित न हो या निर्यातक देश में कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो, तो सामान्य मूल्य का निर्धारण, इसके उत्पादन के मूल देश में इसके मूल्य के संदर्भ में तय किया गया जाएगा।

- 11 अधिकारी ने उपरोक्त धारा के अनुसार जापान के ज्ञात निर्यातकों को जाँच से संबंधित सूचना एवं अपनी टिप्पणी देने का अवसर प्रदान किया। निम्नलिखित निर्यातकों ने इसका उत्तर दिया -

क॥ जे एस आर कार्परेशन, जापान

ख॥ डी एस एम

- 12 चूंकि विषयगत माल केवल जे एस आर कार्पोरेशन तथा डी एस एम द्वारा ही बना जाता है, इन निर्यातकों के लिए अलग-अलग क्षेपण मार्जिन, निर्यातकों द्वारा दी गई सूचना के आधार पर तय किए गए हैं तथा इन पर इसमें नीचे चर्चा की गई है। ऐसे अन्य निर्यातकों के मामले में अलग-अलग क्षेपण मार्जिन का अलग से आकलन नहीं किया गया है जो ई पी डी एम का उत्पादन नहीं करते।

1. जे एस आर कार्पोरेशन, जापान

- 13 सामान्य मूल्य: निर्यातक ने फैक्ट्री-एतर मूल्य में घटीतियों को जोड़ कर बिक्री मूल्य निकाला है। अधिकारी ने नोट किया कि निर्यातक को उस मूल्य का विवरण देना था जिस पर स्वदेशी बाजार में माल बेचा जाता। बिक्री मूल्य का निर्धारण, स्वदेशी बाजार में की गई बिक्रियों से प्राप्त मूल्य के आधार पर किया जाना चाहिए था। तथापि, अधिकारी ने और आगे जाँच होने तक, आरंभिक परिणामों के प्रयोजन के लिए निर्यातक द्वारा किया गया यह दावा स्वीकार किया सामान्य मूल्य ~~xxxxxx~~ अमरीकी डालर प्रति मीट्रिक टन आता है।

- 14 निर्यात मूल्य: निर्यात मूल्य की माँग, भारत को निर्यातित विषयगत माल के औसत सी आई एफ मूल्य के आधार पर की गई है। निर्यातक ने समुद्री भाड़े, बीमे, भुगतान पर ब्याज, जापानी तथा भारतीय व्यापार संस्था को कमीशनों के लिए समायोजन माँगे हैं। इनमें से कुछ खर्च निर्यातक द्वारा नहीं किए गए हैं और वे व्यापारी कम्पनियों द्वारा वहन किए गए हैं। तथापि, चूंकि इन व्यापारी कम्पनियों ने भी आवश्यक सूचना दे दी है, अधिकारी ने इन समायोजनों को और आगे जाँच होने तक आरंभिक परिणामों के प्रयोजन के लिए अनुमत करना उचित समझा। निर्यात मूल्य ~~xxxxxx~~ अमरीकी डालर प्रति मीट्रिक टन बनता है।

डी एस एम इन्टेन्सि

- 15 सामान्य मूल्य: निर्यातक ने सामान्य मूल्य, स्वदेशी बाजार में ग्राहकों को दिए गए औसत बिक्री मूल्य के आधार पर माँगा है। निर्यातक ने स्वदेशी भाड़े, भण्डारण तथा हैण्डलिंग प्रभार के लिए समायोजन माँगे हैं। भण्डारण के लिए किए गए खर्च की प्रकृति के संबंध में कम्पनी ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया है। अतः अधिकारी ने, और आगे जाँच होने तक, आरंभिक निर्णयों के प्रयोजन के लिए इस माँग को स्वीकार न करना उचित समझा है। औसत सामान्य मूल्य ~~xxxxxx~~ अमरीकी डालर प्रति मीट्रिक टन बनता है।

- 16 निर्यात मूल्य: निर्यातक ने निर्यात मूल्य, भारत में ग्राहकों को दिए गए औसत बिक्री मूल्य के आधार पर माँगा है। निर्यातक ने स्वदेशी भाड़े, भण्डारण, हैण्डलिंग, समुद्रपार भाड़े एवं बीमा शुल्क के लिए समायोजन माँगे हैं। भण्डारण के लिए किए गए खर्च की प्रकृति के संबंध में कम्पनी ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया है। अतः अधिकारी ने, और आगे जाँच होने तक आरंभिक निर्णयों के प्रयोजन के लिए इस माँग को स्वीकार न करना उचित समझा है।

- 17 अधिकारी ने नोट किया है कि यद्यपि निर्यातक ने वादी का यह दावा स्वीकार कर लिया है कि भारत को निर्यात के मामले में अतिरिक्त पैकिंग लगती है, तो भी मूल्य समायोजन के संबंध में कम्पनी द्वारा कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई।

- 18 निर्यातक ने कमीशन के लिए कोई समायोजन नहीं माँगा है। निर्यातक द्वारा इसके लिए कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया कि निर्यातक द्वारा भारत में ग्राहकों को माल सीधे ही बेचा गया है और बिक्रियों में कोई कमीशन की बात नहीं है, यद्यपि वादी ने आरोप लगाया है कि बिक्रियाँ व्यापारियों के माध्यम से की गई हैं। अतः अधिकारी ने, व्यापारियों को कमीशन के लिए उसी दर पर प्रावधान बनाना उचित समझा है जो कि जे एस आर कार्पोरेशन द्वारा बताई गई थी। और भी, निर्यातक ने समुद्री भाड़ा आकलन के आधार पर माँगा है और स्पष्टतः यह कम्पनी द्वारा इस पर किए गए खर्च के औसत पर आधारित नहीं है। जे एस आर द्वारा किए गए समुद्री भाड़े के खर्च की तुलना, कम्पनी द्वारा किए गए खर्च से किए जाने पर पता चलता है कि कम्पनी द्वारा माँगा गया समुद्री भाड़ा, जे एस आर द्वारा माँगे गए समुद्री भाड़े से काफी कम है।

इस तथ्य को देखते हुए कि उसी उत्पाद और उसी देश हेतु समुद्री भाड़े के कम्पनी दर कम्पनी विशेष प्रकार से भिन्न होने की आशा नहीं है और कि इसके द्वारा माँगे गए समायोजन के सम्बन्ध में निर्यातक द्वारा कोई साक्ष्य नहीं भेजा गया तब प्राधिकारी यह उपयुक्त समझते हैं कि जे एस आर द्वारा की गई मांग के आधार पर इसके लिए समायोजन प्रदान किया जाए। इस प्रकार औसत निर्यात कीमत अमरीकी डालर *** प्रति मी. टन होती है।

सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना

- 19 तुलना से सम्बन्धित नियम में निम्नलिखित प्रावधान हैं :-

क्षेपण [डम्पिंग] के मार्जिन पर आते समय नियत प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के मध्य एक उपयुक्त तुलना करेंगे। तुलना व्यापार के उसी स्तर सामान्यतया "एक्स वर्क्स" स्तर और उसी समय के नजदीकी संभावित पर की गई बिक्रियों के संबंध में की जाएगी। प्रत्येक मामले में उसकी प्राथमिकता पर अन्तरों हेतु ध्यान दिया जाएगा जो कीमत तुलनात्मकता एवं बिक्री कराधान व्यापार के स्तर, मात्रा, प्रत्यक्ष विशेषताओं आदि की शर्तों एवं नियमों के अन्तर और उन अन्य अन्तरों पर प्रभाव डालते हैं जो कीमत तुलनात्मकता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित होते हैं।

- 20 सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के मध्य तुलना के उद्देश्य से प्राधिकारी ने निर्यातकों द्वारा भेजी गई सूचना और प्राधिकारी के पास उपलब्ध अन्य प्रकाशित सूचना को ध्यान में लेने का भी विचार किया है। ऊपर उल्लिखित के अनुसार सुनिश्चित सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत "एक्स वर्क्स" स्तर पर होती है और इसलिए सामान्य मूल्य की भारित औसत निर्यात कीमत के साथ तुलना पर विचार किया गया है।

- 21 क्षेपण [डम्पिंग] मार्जिन निम्न रूप में होता है :-

निर्यातक	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	क्षेपण मार्जिन
जे एस आर कार्पो.	xxxxxx	xxxxxx	33.76%
डी एस एम	xxxxxx	xxxxxx	8.66%

1. क्षति एवं आकस्मिक सम्बन्धता

- 22 उपरोक्त नियम 11, अनुलग्नक ii के अधीन जब क्षति के किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं तो इस प्रकार के निष्कर्ष में स्वदेशी उद्योग की क्षति का निर्धारण शामिल होगा जिसमें सभी सम्बन्ध तथ्य होंगे जिनमें क्षेपण (डम्प) किया गया आयात का आकार, समान मर्दों हेतु स्वदेशी बाजार में कीमतों पर उनका प्रभाव तथा ऐसी मर्दों के स्वदेशी उत्पादकों पर इस प्रकार के आयात का तदनन्तर प्रभाव पर ध्यान दिया जाएगा। कीमतों पर "डम्प" किए गए आयात के प्रभाव पर विचार करते हुए यह आवश्यक समझा गया है कि यह जांच की जाए कि क्या भारत में समान मर्दों की कीमत की तुलना में "डम्प" किए गए आयात द्वारा महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुई है या क्या इस प्रकार के आयात का प्रभाव एक विशिष्ट डिग्री में कीमतों को मंद करने या कीमत वृद्धि को रोकने के लिए है जो अन्यथा एक विशिष्ट डिग्री में हुआ होता।
- 23 भारत में स्वदेशी उद्योग पर आयात के प्रभाव की जांच हेतु उपरोक्त नियमों के अनुलग्नक iii के अनुसार हम इस प्रकार के घटकों पर विचार कर सकते हैं जिनकी उद्योग की "स्थिति" जैसे उत्पादन, क्षमता का प्रयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, 'मेग्नीच्यूड' एवं क्षेपण (डम्पिंग) के मार्जिन आदि पर एक धारिता रहती है।

24

प्राधिकारी का आकलन है कि :

(क) "डम्प" किये आयात का आकार और बाजार शेयर : जापान से ईपीडीएम रबड़ के आयात में संपूर्ण संदर्भों में तथा भारत में आयात एवं भारत में ईपीडीएम के उपयोग के संदर्भ में भी वृद्धि हुई। याचिकाकर्ता ने 1.4.1993 से वाणिज्यिक उत्पादन प्रारम्भ किया तथा उसके पहले कोई अन्य उत्पादक नहीं था जिसके बावजूद जापान आयात संपूर्ण संदर्भों एवं भारत में उपभोग की तुलना में बढ़ा।

(ख) उत्पादन बिक्रियां और क्षमता का प्रयोग : याचिकाकर्ता ने 1.4.93 से विषय सामग्री का वाणिज्यिक उत्पादन प्रारम्भ किया। याचिकाकर्ता का उत्पादन 1994-95 के 2194 मी.टन से 1996-97 में 3625 मी.टन के रूप में बढ़ा तथा जांच की अवधि में 4573 मी.टन था। उत्पादन में वृद्धि से क्षमता के प्रयोग में भी वृद्धि हुई। बिक्रियां भी संपूर्ण आकार में 1994-95 के 2340 मी.टन से 1996-97 में 3070 मी.टन के रूप में बढ़ी तथा जांच की अवधि में 4711 मी.टन थी। तथापि, उत्पादन बिक्रियों और क्षमता प्रयोग में वृद्धि को इस तथ्य की रोशनी में देखा जाए कि याचिकाकर्ता ने केवल 1.4.1993 से ही वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया।

(ग) औसत बिक्री प्राप्ति : स्वदेशी उद्योग की औसत निवल यूनिट प्राप्ति रु. 84.1 प्रति कि. (1994-95) जांच की अवधि में रु. 88.65 थी। हालांकि स्वदेशी उद्योग की यूनिट बिक्रियां प्राप्ति इन अवधियों में बढ़ी फिर भी ये उत्पादन की लागत से विशेष रूप से नीचे थी जिसके परिणामस्वरूप स्वदेशी उद्योग को आर्थिक नुकसान हुआ।

॥घ॥ स्टाक : स्वदेशी उद्योग का ईपीडीएम रबड़ का स्टॉक 216 मी.टन ॥1994-95॥ से 441 मी.टन ॥1995-96॥ बढ़ा । हालांकि इसमें 1996-97 में 367 मी.टन के रूप में गिरावट आई, फिर भी यह 1994-95 के अन्त के स्टॉकों से उच्चतर था ।

(ङ) कीमत नियंत्रण/दबाव : इन आयातों से भारत में ई पी डी एम रबड़ की कीमतों पर महत्वपूर्ण स्तर तक नियंत्रण/दबाव पड़ रहा है । जिसकी वजह से घरेलू उद्योग को अपनी उत्पादन लागत से बहुत कम कीमत पर रबड़ बेचने को मजबूर होना पड़ा ।

॥च॥ लाभ/हानि : स्वदेशी उद्योग ईपीडीएम रबड़ इसकी उत्पादन क्षमता से नीचे बेच रहे थे जिससे हानि हुई । हालांकि बाद की अवधि में स्वदेशी उद्योग के उत्पादन की लागत में गिरावट आई तथा बिक्री कीमतें बढ़ी जिससे परिणामस्वरूप उत्पादन की प्रति यूनिट उत्पादन हानियों में गिरावट आई तथापि स्वदेशी उद्योग को ईपीडीएम रबड़ की बिक्रियों से भ्रंयकर वित्तीय हानि हो रही थी ।

॥छ॥ क्षति पर निष्कर्ष : जापान से ईपीडीएम का आयात संपूर्ण संदर्भों में बढ़ा ।

- * देश की कुल मांग में विषयगत देश का शेयर विशिष्ट रूप से बढ़ा ।
- * विषयगत देश से ईपीडीएम रबड़ के निर्यात ने स्वदेशी उद्योग को इसकी उत्पादन की लागत की वसूली से रोका तथा इसके निवेश पर एक उपयुक्त वसूली प्राप्त की जिसके परिणामस्वरूप स्वदेशी उद्योग को वित्तीय हानियां हुई ।
- * स्वदेशी उद्योग से सम्बद्ध विभिन्न आर्थिक संकेतक जैसे उत्पादन, क्षमता का प्रयोग, बिक्री मात्रा, औसत बिक्री प्राप्ति, स्टॉक, हानियां संचयी रूप से यह स्थापित करती हैं कि स्वदेशी उद्योग को "विषयगत" क्षति हुई है ।

25 यह देखा गया है कि स्वदेशी उद्योग ने डम्प किये आयात से विषयगत क्षति उठायी है । यह स्थापित करने में कि स्वदेशी उद्योग को विषयगत क्षति विषयगत देशों से आयात द्वारा हुई है, प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि जापान के बाजार शेयर में वृद्धि तथा जापान से निर्यात (उत्पादन की लागत से नीचे) ने स्वदेशी उद्योग को मजबूर किया कि अपरिलिब्धकारी कीमतों पर बिक्री की जा जिससे स्वदेशी उद्योग को वित्तीय हानि हुई ।

भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

- 26 क्षेपण रोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः क्षेपण को निकालना जो स्वदेशी उद्योग को क्षति पहुँचा रहा है और भारतीय बाजार में एक खुली व स्वच्छ प्रतियोगिता की स्थिति पुनः स्थापित करना है जो देश के आम हित में है ।
- 27 यह माना जाता है कि क्षेपण रोधी शुल्क का अधिरोपण विषय सामग्री का प्रयोग करते हुए निर्मित उत्पादों के मूल्य स्तरों को प्रभावित करेगा और साथ ही इन उत्पादों की संबंधित प्रतियोगितात्मकता पर कुछ प्रभाव डालेगा । तथापि, भारतीय बाजार की स्वच्छ प्रतियोगिता क्षेपण रोधी उपायों से कम नहीं की जा सकेगी, विशेषता: यदि क्षेपण रोधी शुल्क की लेवी

- को घरेलु उद्योग की क्षति के निवारण हेतु आवश्यक स्तर तक सीमित कर दिया जाता है । इसके विपरीत, क्षेपण रोधी उपायों का अधिरोपण, क्षेपण कार्यों द्वारा प्राप्त किए गए अनुचित लाभों को दूर करेगा, घरेलु उद्योग की गिरावट से बचाएगा और ईपीडीएम रबड़ के ग्राहकों की व्यापक पसंद की उपलब्धता को बनाए रखने में मदद करेगा । क्षेपण रोधी उपायों के अधिरोपण से विषयगत देश से आयात में किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं आएगी ।
- 28 इसलिए इससे उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा । घरेलु उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए आवश्यक क्षेपण रोधी शुल्क की सीमा का पता लगाने के लिए प्राधिकारी ने घरेलु उद्योग हेतु उत्पाद की अभीष्ट लागत पर विचार करके घरेलु उद्योग हेतु भारत में ईपीडीएम रबड़ के उचित बिक्री मूल्य पर भरोसा किया है ।

एम. लेडेड मूल्य

- 29 लेडेड मूल्य, जापान से ईपीडीएम रबड़ के भारत आसत निर्यात मूल्य के आधार पर निर्धारित किया है, क्षेपण से संबंधित पैरा में यथानिर्धारित दो निर्यातकों हेतु अलग से सीमा शुल्क के वर्तमान स्तर और लेडेड प्रभार के लिए एक प्रतिशत जोड़कर निर्धारित किया गया है ।

एन. निष्कर्ष

- 30 उपयुक्त पर विचार करते हुए यह पाया गया है कि :

क. जापानी मूल की या जापान से निर्यात की गई ईपीडीएम रबड़ भारत को सामान्य मूल्य से कम पर निर्यात की गई, जिससे क्षेपण हुआ है ।

ख. भारतीय उद्योग ने विषयगत क्षति उठाई है

ग. यह क्षति विषयगत देश से आयातों के कारण हुई है

- 31 यह आवश्यक समझा गया है कि जांच के लिए विलम्बित विषयगत देश से निर्यात की गई या वहां की ईपीडीएम रबड़ के सभी आयातों पर अस्थायी रूप से अन्तिम निर्धारण के लिए विलम्बित क्षेपण रोधी शुल्क लगा दिया जाए ।

- 32 इसपर विचार किया गया था कि क्या क्षति को दूर करने के लिए डम्पिंग मार्जिन से कम शुल्क पर्याप्त रहेगा । इस उद्देश्य के लिए किसी निर्यातक के आयातों के लेडेड मूल्य की तुलना जांच की अवधि हेतु निर्धारित घरेलु उद्योग के उचित बिक्री मूल्य से की गई जहां कहीं भी अन्तर डम्पिंग मार्जिन से कम था, डम्पिंग मार्जिन से कम शुल्क की सिफारिश की गई है । तदनुसार यह प्रस्ताव है कि अस्थायी क्षेपण विरोधी शुल्क केन्द्र सरकार द्वारा इस विषय में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से कस्टम्स टैरिफ के अध्याय 40 के तहत अन्तिम निर्धारण के लिए विलम्बित जापान से निर्यात की गई या जापान मूल की ईपीडीएम रबड़ के सभी आयातों पर अधिरोपित की जाए । क्षेपण रोधी शुल्क नीचे कालम 3 में उल्लेखित राशि और प्रति किलोग्राम आयातों के लेडेड मूल्य के मध्य का अन्तर होगा

एस. एन.	कंपनी का नाम	राशि (रु. प्रति मी. टन)
1.	जे. एस. आर. कार्पोरेशन	114446
2.	डीएसएम	101716
3.	कोई अन्य निर्यातक	114446

33. इस उद्देश्य हेतु लेडेड मूल्य अंकन योग्य मूल्य होगा जैसा कि सीमा शुल्क दरसूची अधिनियम, 1975 धारा 3 3 , 8बी 9 सीमा शुल्क अधिनियम 1962 के अधीन कस्टम द्वारा और कस्टम टैरिफ एक्ट 1975 की धारा 3 3ए, 8बी, 9 9ए के अधीन की ड्यूटी को छोड़कर सभी कस्टम ड्यूटी हेतु निर्धारित किया गया है ।

एस आने की पद्धति

34. पूर्व निष्कर्षों की अधिसूचना के बाद निम्नलिखित पद्धति अपनायी:
- क. प्राधिकारी इन निष्कर्षों पर सभी इच्छुक पार्टियों से टिप्पणियां आमंत्रित करते हैं तथा अंतिम निष्कर्षों में इन पर विचार किया जाएगा ।
 - ख. सम्बन्धित समझी जाने वाली निर्यातक, आयातक, याचिकाकर्ता व अन्य इच्छुक पार्टियों को प्राधिकारी द्वारा अलग से टिप्पणियों हेतु सम्बोधित किया जाता है जो पत्र प्रेषण की तारीख से 40 दिन के भीतर अपने विचार भेज सकते हैं । कोई अन्य इच्छुक पार्टी भी इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिन के भीतर अपने विचार भेज सकती है ।
 - ग. प्राधिकारी आवश्यक समझी जाने वाली सीमा तक सत्यापन करेगा । इस स्थिति में कोई भी नया साक्ष्य स्वीकार्य नहीं होगा ।
 - घ. प्राधिकारी सभी इच्छुक पार्टियों को मौखिक प्रस्तुतियों हेतु अवसर प्रदान करेगा, जिसके लिए तारीख और समय की सूचना इच्छुक समझी जाने वाली पार्टियों को अलग से भेजी जाएगी,
 - ङ. प्राधिकारी अंतिम निष्कर्ष घोषित करने से पहले आवश्यक तथ्यों को बताएंगे

रति विनय झा, नियत अथारिटी एवं अतिरिक्त सचिव

MINISTRY OF COMMERCE
(Directorate General of Anti Dumping & Allied Duties)

NOTIFICATION

New Delhi, the 24th December, 1998

Subject: Anti dumping investigation concerning imports of EPDM Rubber -- Preliminary Findings

16/1/98/DGAD:—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof :

A. PROCEDURE

The procedure described below has been followed with regard to the investigations:

- i. The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the Rules, received written application from M/s. Herdillia Unimers Ltd., on behalf of the domestic industry, alleging dumping of EPDM Rubber, originating in or exported from Japan;
- ii. The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner, decided to initiate dumping investigations against imports of EPDM Rubber from Japan. The Authority notified the Embassy of Japan about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigations in accordance with sub-rule 5(5) of the Rules;
- iii. The Authority issued a public notice dated 20th May, 1998 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigations concerning imports of EPDM Rubber, classified under custom sub-headings 4002.70 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975, originating in or exported from Japan;
- iv. The Authority forwarded a copy of the public notice to the known exporters from Japan (whose details were made available by the petitioner) and industry associations in India and gave them an opportunity to make their views known in writing in accordance with the rule 6(2);
- v. The Authority forwarded a copy of the public notice to the known importers of EPDM Rubber in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;
- vi. Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of EPDM Rubber for the past three years, including the period of investigations. No information was however, received from CBEC;

- vii. The Authority provided a copy of the petition to the known exporters from Japan and the Embassy of Japan in accordance with rules 6(3) supra;
- viii. The Authority sent questionnaire, to elicit relevant information, to the following exporters of the subject goods, in accordance with the rule 6(4):
 - a) Japan Synthetic Rubber Co., Japan, now known as JSR Corpn. and hereinafter referred to as JSR also;
 - b) DSM Idemitsu Co. Ltd., Japan (hereinafter referred to as DSM also)
- ix. The Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigations in accordance with rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporter was also sent to the Embassy, along with a list of known exporter(s)/producer(s);
- x. A questionnaire was sent to a number of known importers of EPDM Rubber in India calling for necessary information in accordance with rule 6(4):
- xi. Additional information regarding injury was sought from the petitioner, which was also received;
- xii. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- xiii. Cost investigations were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry;
- xiv. Investigations were carried out for the period from starting 1st April, 1996 to 30th Sept., 1997 (18 months).

B. VIEWS EXPRESSED BY PETITIONER, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES AND EXAMINATION BY AUTHORITY

- 2. The submissions made by the petitioner, exporters, importers, and other interested parties have been brought out, examined, considered and have been dealt at appropriate places in this notification.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

- 3. The product under consideration in the present investigations is EPDM Rubber of all forms/grades/purities. EPDM Rubber is classified under custom sub-heading 4002.70 of Schedule 1 of the Customs Tariff Act, 1975. EPDM is classified under sub-heading no. 4002.70.09 under the Harmonised International Trade Classification system and is different from polybutadiene classified under ITC sub heading no. 4002.70.01.

4. EPDM is a synthetic polymer of ethylene, propylene and diene. EPDM is produced by solution polymerisation. EPDM provide better ozone and thermal resistance and is mainly used in automotive applications such as profiles, radiators, hoses and seals; in building and construction as profiles, roofing foils and seals; in cable & wire as cable insulation and jacketing and in applications as a wide variety of mostly in moulded article.
5. The manufacturing process, functions & uses and custom classification indicated above are, however, indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigations.

D. LIKE ARTICLES

6. In order to examine whether the EPDM Rubber produced by the domestic industry is a like article to the EPDM Rubber exported from Japan, characteristics such as physical characteristics (size, chemical composition, raw material), manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing and tariff classification of the goods have been considered.
7. It has been argued by DSM that there is a variety of different technologies to produce EPDM, which result in a variation to a certain degree in the EPDM produced. One of the difference that arises is the quality of the goods produced. Further, it has been argued by the exporter that EPDM is not comparable to NBR as the manufacturing process of NBR is less complex than EPDM. Change in EPDM of different producers requires changes in the recipe, failing which the finished product will show different physical property.
8. The Authority notes that the only difference pointed out by the exporter is with regard to the technology to producer EPDM by different producers. The Authority notes that there is implied acceptance by the exporter that the goods imported from the subject country can be substituted with the goods produced by the domestic industry. Even if the argument of the exporter is accepted that there may be some difference in quality (though the argument is unsubstantiated and deserves to be ignored on this ground along), difference in quality does not imply that the two goods are not interchangeable. Mere difference in quality calls for adjustments for the purpose of fair comparison. No price adjustment is, however, feasible under the present circumstances in view of unquantified claim. The Authority, therefore, holds that the goods exported from Japan and goods produced by the petitioner have characteristics closely resembling each other and the two are technically and commercially substitutable. The goods produced by the domestic industry are a like article to the goods exported from Japan within the meaning of the Rule 2(d).

E. DOMESTIC INDUSTRY

9. The petition has been filed by M/S. Herdillia Unimers Ltd. There is no dispute that there is no other producer of EPDM Rubber in India. The petitioner, therefore, satisfies the standing to file the present petition and constitutes domestic industry in accordance with Rule 2(b) supra.

F. DUMPING**NORMAL VALUE:**

10. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-
 - (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
 - (b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

11. The Authority provided opportunity to the known exporters from Japan to furnish information relevant to the investigations and offer comments, if any in accordance with the Section cited above. The following exporters responded:

- a) JSR Corpn., Japan;
- b) DSM Idemitsu.

12. Since the subject goods are produced only by JSR Corpn. and DSM, separate dumping margins in respect of these exporters have been determined on the basis of the information furnished by the exporters and the same is discussed hereinbelow. Separate dumping margin in respect of other exporters who have furnished information but who do not produce EPDM are not been assessed separately.

JSR CORPN., JAPAN

13. Normal value: The exporter has derived the selling price by adding the deductions to the ex-factory price. The Authority notes that the exporter was required to furnish the details of the price at which goods have been sold in the home market. The selling price should have been determined on the basis of the prices arrived from the sales made in the home market. The Authority has, however, accepted the claim made by the exporter for the

purpose of preliminary determination, pending further investigations. The normal value comes to US \$ ***** pmt.

14. Export price: The export price has been claimed on the basis of average CIF export price of the subject goods to India. The exporter has claimed adjustments on account of ocean freight, insurance, interest on payment, commission to the Japanese trading house and Indian trading house. Some of these expenses are not incurred by the exporters and are borne by the trading companies. However, since these trading companies have also furnished necessary information, the Authority considers it appropriate to allow these adjustments for the purpose of preliminary determination, pending further investigations. The export price comes to US \$ ***** pmt.

DSM IDEMITSU

15. Normal value: The exporter has claimed normal value on the basis of an average of selling price to customers in domestic market. The exporter has claimed adjustments on account of inland freight, storage and handling charges. No explanation has been provided by the company with regard to the nature of expenses involved on account of storage. The Authority, therefore, considers it appropriate to disallow the claim on account of storage for the purpose of preliminary determination, pending further investigations. The average normal value comes to US \$ *****
16. Export price: The exporter has claimed export price on the basis of an average of selling price to customers in India. The exporter has claimed adjustments on account of inland freight, storage, handling, overseas freight and insurance charges. No explanation has been provided by the company with regard to the nature of expenses involved on account of storage. The Authority, therefore, considers it appropriate to disallow the claim on account of storage for the purpose of preliminary determination, pending further investigations.
17. The Authority notes that though the exporter has accepted the claim of the petitioner that there is extra packing involved in case of exports to India, yet no information with regard to the price adjustment has been furnished by the company.
18. The exporter has not claimed any adjustment on account of commission. No evidence has been furnished by the exporter that the goods have been sold by the exporter directly to the customers in India and sales did not involve any payment of commission, even though the petitioner has alleged that sales are made through traders. The Authority, therefore, considers it appropriate to provide for commissions to the traders at the same rate as has been disclosed by JSR Corpn. Further, the exporter has claimed ocean freight on estimated basis and is apparently not based on average of the expenditure incurred by the company on this account. Comparison of ocean freight incurred by JSR with the expenditure incurred by the company reveals that the ocean freight claimed by the company is significantly lower than the ocean freight claimed by JSR. In view of the fact that ocean freight for the same product and same country is not expected to be significantly different from company to company and in view of the fact that no evidence furnished by the exporter with regard to the adjustment claimed by it, the Authority considers it appropriate to provide for adjustment on this account on the

basis of claims made by JSR. The average export price thus comes to US \$ ***** pmt.

Comparison of normal value and export price:

19. The rules relating to comparison provides as follows:

"While arriving at margin of dumping, the designated authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability."

20. For the purpose of fair comparison between the normal value and the export price, the Authority has considered taking into account the information furnished by the exporters, and other published information available with the Authority. The normal value and export price determined, as detailed above, are at ex-works level and therefore, the comparison of normal value with weighted average export price has been considered.

21. The dumping margin comes as under:

Exporter	Normal value	Export price	Dumping margin
JSR Corpn.	*****	*****	33.76%
DSM	*****	*****	8.66%

G. INJURY AND CAUSAL LINK

22. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of Injury is arrived at, such finding shall involve determination of the Injury to the domestic industry, "...taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....". In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
23. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, we may consider such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the rules supra.
24. The Authority observes that:
- (a) Volume and Market share of Dumped imports: Imports of EPDM Rubber from Japan increased in absolute terms and relative to total imports in India as also consumption of EPDM in India. The petitioner started commercial production from 1.4.1993 and there was no other producer before that, in

spite of which the imports from Japan have increased in absolute terms, relative to total imports in India as also relative to consumption in India.

- (b) Production, Sales and Capacity Utilisation: The petitioner started commercial production of the subject goods from 1.4.1993. The production of the petitioner increased from 2194 MT in 1994-95 to 3625 MT in 1996-97 and was 4573 MT in the period of investigation. Increase in production resulted in increase in the capacity utilisation also. Sales in absolute volumes also increased from 2305 MT in 1994-95 to 3062 MT in 1996-97 and were 4711 MT in the period of investigation. However, increase in production, sales and capacity utilisation have to be viewed in the light of the fact that the petitioner started commercial production only from 1.4.1993.
- (c) Average Sales Realisation: Average net unit sales realisation of the domestic industry increased from Rs. 84.1 per kg. (1994-95) to Rs. 88.65 in the period of investigation. Though the unit sales realisation of the domestic industry increased over the period, yet the same was significantly below the cost of production, resulting in financial losses to the domestic industry.
- (d) Stocks: Stock of EPDM Rubber with the domestic industry increased from 216 MT (1994-95) to 441 MT (1995-96). Though the same declined to 367 MT in 1996-97, yet the same was higher than the stocks at the end of 1994-95.
- (e) Price suppression/depression: The imports were depressing the prices of EPDM Rubber in India to a significant degree and forced to the domestic industry to sell the Rubber at prices significantly below its cost of production.
- (f) Profit/Loss: The domestic industry was selling EPDM Rubber significantly below its cost of production, resulting in losses. Though the cost of production of the domestic industry declined and selling prices increased over the period resulting in decline in the losses per unit of production, yet the domestic industry was suffering severe financial losses from sales of EPDM Rubber.
- (g) Conclusion on injury: The imports of EPDM Rubber from Japan increased in absolute terms.
- ♦ The share of the subject country in the total demand in the country increased significantly.
 - ♦ Exports of EPDM Rubber from the subject country prevented the domestic industry from recovering its cost of production and earn a fair return on its investment, resulting in financial losses to the domestic industry.
 - ♦ Various economic indicators relating to domestic industry such as production, capacity utilisation, sales quantities, average sales realisation, stock, losses collectively and cumulatively establish that the domestic industry has suffered material injury.
25. It is seen the domestic industry has suffered material injury from dumped imports. In establishing that the material injury to the domestic industry has been caused by the imports from the subject countries, the Authority holds that increase in market share of Japan and exports from Japan significantly below the cost of production forced to the domestic industry to sell at unremunerative prices, resulting in financial losses to the domestic industry.

H. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

26. The purpose of anti dumping duties, in general, is to eliminate dumping, which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.
27. It is recognised that the Imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures, particularly if the levy of the anti dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of EPDM Rubber. Imposition of anti dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.
28. To ascertain the extent of Anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority has relied upon reasonable selling price of EPDM Rubber in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production for the domestic industry.

I. LANDED VALUE:

29. The landed value has been determined on the basis of weighted average export price of EPDM Rubber from Japan, determined separately for the two exporters as described in the para relating to dumping, after adding the prevailing level of customs duties and one percent towards landing charges.

J. CONCLUSIONS:

30. It is seen, after considering the foregoing, that:
- a. EPDM Rubber originating in or exported from Japan has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
 - b. The Indian industry has suffered material injury;
 - c. The injury has been caused by the imports from the subject country.
31. It is considered necessary to impose anti dumping duty, provisionally, pending final determination, on all imports of EPDM Rubber originating in or exported from the subject country, pending investigations.
32. It was considered whether a duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove the injury. Landed prices of the imports for individual exporters, for the purpose, was compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigations. Wherever the difference was less than the dumping margin, a duty lower than the dumping margin is recommended. Accordingly, it is proposed that provisional anti dumping duties be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of EPDM Rubber

originating in or exported from Japan falling under Chapter 40 of the Customs Tariff, pending final determination. The anti-dumping duty shall be the difference between the amounts mentioned in column 3 below and the landed price of imports per kg.

S N	Name of company	Amount (Rs. pmt)
1.	JSR Corpn.	114446
2.	DSM Idemitsu Co. Ltd	101716
3.	Any other exporter	114446

33. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

K. **FURTHER PROCEDURE:**

34. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:
- The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
 - Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the despatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
 - The Authority would conduct verifications to the extent deemed necessary. No fresh evidence will be accepted at this stage;
 - The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions, for which the date and time shall be communicated to all known interested parties separately;
 - The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority & Addl. Secy.